



युवा वर्ग और जलवायु आपातकाल

युवा वर्ग एक क्रांतिकारी ताकत है और कई महत्वपूर्ण सामाजिक आंदोलनों में सबसे आगे रहा है। युवा आज जलवायु आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। हमारे पर्यावरण की हानि को रोकने और जलवायु आपातकाल को समाप्त करने के लिए हमें एक विशाल, व्यापक आधारवाले आंदोलन की आवश्यकता है, जिसके लिए युवा वर्ग के उत्पीड़न को समाप्त करना महत्वपूर्ण है।

युवा लोगों और युवा वयस्कों के उत्पीड़न के कारण युवा लोगों के नेतृत्व को वयस्कों द्वारा गंभीरता से नहीं लिया जाता। यदि इस भावना को चुनौती न दी जाए, तो कई युवाओं के मन में यह गलत धारणा बैठ जाती है कि वे स्मार्ट या शक्तिशाली नहीं हैं और इस भावना को चुनौती नहीं दी जा सकती। आप कई शालेय शिक्षा प्रणालियों में उत्पीड़न देख सकते हैं, जहाँ युवाओं को हमेशा यह बताया जाता है कि उन्हें क्या करना है और नेतृत्व करने या अपने स्वयं के हितों का पता लगाने के लिए उन्हें बहुत कम अवसर दिया जाता है।

उत्पीड़न के बावजूद, युवा लोगों और युवा वयस्कों ने कई पर्यावरणीय और सामाजिक-न्याय आंदोलनों का नेतृत्व किया है। युवा लोगों के पास हतोत्साहित भावनाओं का संघयन कम मात्रा में होता है (वयस्कों की तुलना में) और वे अक्सर प्रकृति और अन्य मनुष्यों के साथ मानव जाति के अतर्निहित संबंध को याद रख सकते हैं। यह बात छोटे बच्चों में देखी जा सकती है - वे प्राकृतिक दुनिया और उसमें रहने वाले लोगों के प्रति उत्सुक होते हैं और जब वे कुछ ऐसा देखते हैं जो सही नहीं है, तो वे कार्रवाई करना चाहते हैं।

दुनिया में हर व्यक्ति या तो जवान है या कभी जवान था। इसका मतलब यह है कि हम सभी ने युवा लोगों के उत्पीड़न के प्रभावों को महसूस किया है। हम चोटों से उबर सकते हैं, अपने विचारों को गंभीरता से ले सकते हैं, और जलवायु आपातकाल संबंधित किसी भी हतोत्साह या निराशा को पीछे छोड़ सकते हैं। ऐसा करना कठिन हो सकता है, क्योंकि जब हमने युवावस्था में यह करने का प्रयास किया, तो हमारे आसपास



के वयस्कों द्वारा हमारी हँसी उड़ाई जाती थी या हमें अनदेखा किया जाता था। हालाँकि, अपनी कहानियाँ एक-दूसरे के साथ साझा कर, दर्दनाक भावनाओं को व्यक्त कर और मिलजुलकर कार्रवाई कर हम चोटों से उबर सकते हैं।

कई वयस्क लोगों में पर्यावरण के विनाश को सीमित करने के लिए आवश्यक विस्तृत और व्यापक परिवर्तन करने को लेकर निराशा की भावनाएँ जमा हो गई हैं। जिन वयस्कों ने

पर्यावरणीय विनाश और जलवायु आपातकाल से लड़ना छोड़ दिया है, वे अक्सर युवाओं को “आखिरी उम्मीद” के रूप में देखते हैं। साथ ही, युवा लोगों और युवा वयस्कों को पूरी तरह से बुद्धिमान और सक्षम नहीं माना जाता है और इसलिए हमारे जलवायु नेतृत्व में उन्हें पूरी तरह से समर्थन नहीं मिलता है। पर्यावरण से संबंधित अपनी पहल पर काम करते हुए वयस्कों द्वारा युवा लोगों और युवा वयस्कों के नेतृत्व का पूरा समर्थन किया जाना आवश्यक है।



‘संपूर्ण जीवसृष्टि की शाश्वतता’ (सस्टेनिंग ऑल लाइफ – एसएएल) प्राथमिक स्तर पर काम करनेवाला एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन है, जो लोगों के आपसी भेदभाव को समाप्त करने के संदर्भ में जलवायु आपातकाल को समाप्त करने के लिए काम कर रहा है। ‘नस्लवाद के खिलाफ संगठन’ (यूनाइटेड टू एंड रेसिज्म - यूईआर) में अलग-अलग देशों के विविध प्रकार के लोग शामिल हैं, जो दुनिया में नस्लवाद को खत्म करने के लक्ष्य के साथ-साथ अन्य सभी समूहों के प्रयासों का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। यूईआर और एसएएल ‘पुनर्मूल्यांकन समुपदेशन’ की परियोजनाएँ हैं और उनके साधनोंका उपयोग करते हैं। ‘पुनर्मूल्यांकन समुपदेशन’ एक ऐसा भली-भाँति परिभाषित सिद्धांत और अभ्यास है, जो उत्पीडन और अन्य प्रकार के दुःखों से उत्पन्न भावनात्मक नुकसान से स्वयं को मुक्त करने में सभी आयुवर्ग और पृष्ठभूमि वाले लोगों की सहायता करता है, ताकि वे एक-दूसरे की प्रभावपूर्ण तरीके से मदद कर सकें। बारी-बारी से एक-दूसरे को सुनने और दुःखद भावनाओं को व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करने से लोग पुराने दुखों से उबर सकते हैं और सोचने, बोलने तथा दूसरों को संगठित कर एक ऐसी दुनिया के निर्माण का नेतृत्व करने में सक्षम हो सकते हैं, जिसमें मनुष्य और अन्य जीवमात्र को महत्व देने के साथ ही पर्यावरण को भी पुनर्स्थापित और संरक्षित किया जाता है। फिलहाल ‘पुनर्मूल्यांकन समुपदेशन’ 95 देशों में मौजूद है।



SustainingAllLife.org



UnitedToEndRacism.org



[sustaining_all_life](https://www.instagram.com/sustaining_all_life)



[@sustainallife](https://twitter.com/@sustainallife)



[SustainingAllLife](https://www.facebook.com/SustainingAllLife)



बसू आर चलिता



हम सभी को युवा लोगों के उत्पीड़न के प्रभावों से उबरने की जरूरत है, ताकि जलवायु आपातकाल को समाप्त करने और पर्यावरण को पुनर्स्थापित करने के लिए संयुक्त आंदोलन का निर्माण करने में हम सक्षम हो सकें। यह तुरंत होनेवाला या आसान काम नहीं है। हममें से कई लोग भावनात्मक काम का विरोध करते हैं। हम सोच सकते हैं कि यह करने के लिए हमारे पास समय नहीं है। हम महसूस कर सकते हैं कि हम जीवन में तभी सफल हो पाए हैं, जब हमने लोगों को यह नहीं दर्शाया है कि हमें कितनी चोट पहुँची है। हमें अपनी भावनाओं को लेकर शर्मिंदगी या लज्जा महसूस हो सकती है। हो सकता है कि हम खुद को उन चोटों से सुन्न कर और यह मानकर जीवित रह गए हों कि हम कभी भी इससे मुक्त नहीं होंगे। हमें लग सकता है कि उन भावनाओं को दोबारा देखना और महसूस करना असहनीय होगा। शायद इसका कारण यह है कि हमें अपनी कहानियाँ बताने का कोई अवसर नहीं मिला या जब हमने उन्हें बताने

की कोशिश की, तो हमारे साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया गया।

संपूर्ण जीवसृष्टि की शाश्वतता (सस्टेनिंग ऑल लाइफ) में हमने सीखा है कि उत्पीड़न से होने वाले मानसिक और भावनात्मक घावों को भरना संभव है, और हम ऐसा करने के लिए साधन प्रदान करते हैं। एक सहायक नेटवर्क में युवा लोगों के उत्पीड़न से संबंधित दुःखद भावनाओं को व्यक्त करके, हम और अधिक एकजुट, आशावान, विचारशील, हर्षित और प्रतिबद्ध हो सकते हैं। युवाओं को उत्पीड़न के प्रभावों से उबरने में सहायता देना और उनकी पहल तथा नेतृत्व का समर्थन करना एक मजबूत पर्यावरण आंदोलन के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण कदम हैं।





“संपूर्ण जीवसृष्टि की शाश्वतता और नस्लवाद के खिलाफ संगठन” का कार्य

यदि हम अगले पांच से दस वर्षों में अपनी अर्थव्यवस्था, अपनी ऊर्जा प्रणालियों और अपने जीवन में कुछ बहुत बड़े बदलाव करें, तो मानव-जनित जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को सीमित करना और पर्यावरण को पुनर्स्थापित करना संभव है। ‘संपूर्ण जीवसृष्टि की शाश्वतता’ (सस्टेनिंग ऑल लाइफ) और ‘नस्लवाद के खिलाफ संगठन’ (यूनाइटेड टू एंड रेसिज्म) का मानना है कि नस्लवाद, स्थानीय लोगों के नरसंहार, वर्गवाद, लिंगवाद और अन्य उत्पीड़नों (oppressions) पर जब हम एक साथ विचार करेंगे, तभी पर्यावरण संकट का समाधान हो सकता है। पर्यावरण के विनाश और जलवायु परिवर्तन का प्रभाव इन उत्पीड़नों द्वारा लक्षित समूहों और अन्य कमजोर आबादी (बुजुर्ग, विकलांग और बहुत छोटे लोगों की आबादी सहित) पर सबसे अधिक पड़ता है। आवश्यक परिवर्तन लाने के लिए जलवायु परिवर्तन, नस्लवाद और शोषण के प्रभावों से लड़ने वाले दुनिया भर के हर पृष्ठभूमि के लोगों के बीच एक बड़े पैमाने पर आंदोलन की आवश्यकता होगी।

‘संपूर्ण जीवसृष्टि की शाश्वतता’ (सस्टेनिंग ऑल लाइफ) और ‘नस्लवाद के खिलाफ संगठन’ (यूनाइटेड टू एंड रेसिज्म) मानता है कि एक पर्याप्त बड़े और शक्तिशाली आंदोलन के निर्माण में आने वाली बाधाएँ इस प्रकार हैं - (1) राष्ट्रों और जन-समुदायों के बीच लंबे समय से चला आ रहा विभाजन (सामान्यतः उत्पीड़न और विशेष रूप से नस्लवाद और वर्गवाद के कारण होनेवाला विभाजन), (2) यह व्यापक भावना कि अब बहुत देर हो चुकी है और कोई भी कार्रवाई अप्रभावी होगी, (3) जलवायु संबंधी आपात स्थिति को स्वीकार न करना या उससे जुड़ने में विफलता, और (4) पर्यावरणीय संकट तथा हमारी आर्थिक प्रणाली की विफलताओं के आपसी संबंधों को प्रभावशाली तरीके से सुलझाने में आनेवाली कठिनाइयाँ। ऐसे मुद्दों के साथ ही अन्य मुद्दों को सुलझाने के लिए भी “सस्टेनिंग ऑल लाइफ और यूनाइटेड टू एंड रेसिज्म” काम करता है।

उत्पीड़न की भूमिका

हमारे समाज का आर्थिक और राजनीतिक स्वरूप ऐसा है कि विकास और लाभ की मांग करते समय जनसामान्य, अन्य सजीवों और पृथ्वी के प्रति सम्मान की भावना नगण्य रह जाती है। इसका परिणाम शोषण और उत्पीड़न है। जबरदस्त अन्याय करने, संसाधनों तक पहुँच सीमित करने, और अरबों लोगों के जीवन को नुकसान पहुँचाते हुए उत्पीड़न (जैसे नस्लवाद, वर्गवाद, लिंगवाद और युवा लोगों का उत्पीड़न) सभी को शिकार बनाते हैं। एक बार उत्पीड़न का निशाना बनने के बाद हम दूसरों के साथ वैसा ही चोट पहुँचानेवाला बर्ताव करते हैं, जैसा हमने अनुभव किया होता है। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप हम मानसिक और भावनात्मक नुकसान (harm) का अनुभव करते हैं। हमारा अनुभव यह है कि भले ही लोग उत्पीड़क कार्य करने के लिए प्रेरित होते हों, पर ऐसा व्यवहार करना उनकी मूल प्रवृत्ति नहीं होती, बल्कि जब कोई व्यक्ति भावनात्मक रूप से घायल होता है, तभी यह प्रेरणा उत्पन्न होती है।

आर्थिक शोषण को स्थापित करने और उसे बनाए रखने के लिए उत्पीड़क समाज इस संवेदनशीलता का चालाकी से उपयोग करता है।

व्यक्तिगत नुकसान से उबरने का महत्व

उत्पीड़न और अन्य दुखद अनुभवों से हमारा जो मानसिक और भावनात्मक नुकसान होता है, उससे हमारी स्पष्ट रूप से सोचने की क्षमता बाधित होती है और यह नुकसान लोगों के समूहों को एक-दूसरे के खिलाफ खड़ा कर देता है। इससे जलवायु आपात स्थिति के बारे में सोचना और उस पर प्रभावी ढंग से प्रतिक्रिया देना हमारे लिए कठिन हो जाता है।

उत्पीड़न को बनाए रखने रखने और अन्य दुखदायक व्यवहार को जन्म देने में सहायक चोटों से उबरना न तो तुरंत हो पाता है और न यह आसान काम है। हममें से कई लोग उबरने की इस व्यक्तिगत प्रक्रिया (personal healing process) का विरोध करते हैं। हो सकता है कि स्वयं को सुन्न करते हुए हम इस उत्पीड़नजन्य नुकसान को अनदेखा कर दें। हममें से कुछ लोग ऐसा भी मानते हैं कि हम कभी भी इस नुकसान से मुक्त नहीं होंगे। ‘संपूर्ण जीवसृष्टि की शाश्वतता’ (सस्टेनिंग ऑल लाइफ) और ‘नस्लवाद के खिलाफ संगठन’ (यूनाइटेड टू एंड रेसिज्म) में हमने सीखा है कि खुद को इन चोटों से मुक्त होना और प्रभावी आयोजन में आने वाली बाधाओं को दूर करना संभव है। यदि कोई हमारी बात ध्यान से सुनता है और हमें दुःख, भय और अन्य दर्दनाक भावनाओं को व्यक्त करने की अनुमति देकर उसके लिए प्रोत्साहित करता है, तो हम दुखद अनुभवों से उबर (heal) सकते हैं। यह हमारी प्राकृतिक रूप से उबरने की प्रक्रियाओं के माध्यम से होता है, जैसे कि बात करना, रोना, कांपना, गुस्सा व्यक्त करना और हंसना।

एक सहायक नेटवर्क में भावनात्मक दर्द को दूर करके, हम एकजुट, आशावान, विचारशील, आनंदमय और प्रतिबद्ध रह सकते हैं। परिणामस्वरूप जलवायु परिवर्तन और नस्लवाद के प्रभावों को रोकने के हमारे आंदोलन चलाने के लिए हमें ताकत मिलती है।



Sustaining All Life



अधिक जानकारी के लिए देखें:

www.sustainingalllife.org या www.unitedtoendracism.org
या लिखें: Sustaining All Life/United to End Racism
19370 Firlands Way N, Shoreline, WA 98133-3925 USA
ईमेल: sal@rc.org टेलीफोन: +1-206-284-0311